DOI: 10.51220/hjssh.v5i1.10

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 5 pp.89 -94, December, 2010, ISSN. 0975 - 9891

गढ़वाल में ज्योतिष परम्परा

जे०के० गोदियाल एवं कुसुम डोबरियाल
संस्कृत विभाग
हे0नं0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी गढ़वाल
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय), 246001, उत्तराखण्ड।

Received: 19-9-2010 **Revised: 26-11-2010** **Accepted: 28-12-2010**

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र में गढ़वाल हिमालय की ज्योतिश परम्परा का विस्तीर्ण वर्णन किया गया है। यहाँ की भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आदि विभिन्न विशम समस्याओं के कारण पुरातन ज्योतिष ग्रन्थ अद्यावधि यद्यपि अप्राप्त हैं तथापि उपलब्ध ज्योतिष साहित्य एवं प्रचलित मान्यताओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गढ़वाल में ज्योतिष की समृद्ध परम्परा विद्यमान रही है।

Keywords- Astrology, Garhwal, Uttarakhand.

वेदों के प्रति हमारी आदिकाल से ही अविचल आस्था रही है। वैदिक युग के परवर्ती काल में वेद के अर्थ को समझना दुरूह होता गया। इसी कारण वैदिक मंत्रों के अर्थावबोध के लिए संस्कृत वाङ्मय में वेदांगों की रचना की गई। वेदार्थ ज्ञान के लिए जिन शड् वेदांगों[1] की संरचना की गई उनमें ज्योतिष का विशेष महत्त्व है। वेदों में यज्ञ का सर्वाधिक महत्त्व है। यज्ञों का काल के उचित निवेश से साक्षात् संबंध है। इस यज्ञोपयोगी काल गणना का कार्य ज्योतिष विद्या ही करती है। इसी कारण इसे काल विधायक शास्त्र भी कहते हैं। पाणिनि शिक्षा में ''ज्योतिशामयनं चक्षु''[2] कहकर ज्योतिष को वेद का नेत्र कहा गया है। ज्योतिष की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि जैसे मयूरों की शिखा और नागों की मणियाँ प्रधान होती हैं उसी प्रकार वेदांगों में ज्योतिष मूर्धन्य है। धर्मप्राण भारत में वैदिक युगीन समस्त जन, समाज व राष्ट्र के कल्याण के निमित्त ग्रहों की पूजा करते थे और उनकी यही जिज्ञासा परवर्ती काल में ज्योतिषशास्त्र के रूप में पल्लवित व पुष्पित हुई।

गढ़वाल में संस्कृत लेखन

गढ़वाल (हिमालय) की भूमि वैदिक ऋषि-मुनियों की तपोस्थली/तपोभूमि कही जाती है। वैदिक ऋषियों के निवास के कारण गढ़वाल में संस्कृत लेखन की परम्परा भी वैदिक कालीन है। गढ़वाल (हिमालय) के इसी सर्वविदित वैभव को कवि कालिदास ने भी रेखांकित किया है।[3] विश्व साहित्य में अनुपम व अद्वितीय स्थान रखने वाले ''संस्कृत वाङ्मय'' के आविर्भाव की पृष्ठभूमि में भी गढ़वाल का योगदान

©SHARAD

विख्यात है। उत्तुंग हिमालय के शिखरों से प्रवहमान अगाध जलधारा वाली भगवती भागीरथी जिस प्रकार अनादिकाल से अपनी अमृतमय जलधारा से भारतभूमि को सस्य-सम्पन्न एवं समृद्धिशाली बनाती आयी है उसी प्रकार गढ़वाल में, जिसे केदारखण्ड, देवभूमि, देवतात्मा आदि अनेक नामों से जाना जाता है, संस्कृत काव्य-स्रोतः स्विनी भी वैदिक काल से ही प्रवाहित होती रही है। प्रकृति प्रदत्त विविध वैभव से परिपूर्ण हिमालयीय प्रदेश गढ़वाल में ज्ञान-वैविध्य की धारा भी चिरन्तन व शाश्वत है। इसी ईश्वरीय प्रताप का प्रभाव है कि वैदिक काल से ही गढ़वाल में संस्कृत-वाङ्मय के प्रत्येक पक्ष का अनुकरणीय एवं उल्लेखनीय विकास हुआ। विकास के इस क्रम में वैदिक काल से लेकर महाभारत काल तक इस प्रदेश में धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना के अनेक ऐसे प्रेरणास्पद केन्द्रों, मठों, विद्यापीठों तथा आश्रमों का उल्लेख मिलता है जिनमें संस्कृत शिक्षण की परम्परा विद्यमान थी। इसी परम्परा में गढ़वाल में संस्कृत वाङ्मय के वैदिक-साहित्य, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, पुराण-साहित्य, साहित्य, अलंकार, छन्द, व्याकरण तथा ज्योतिशशास्त्र प्रत्येक विधा के अध्ययन अध्यापन के साथ ही उनके प्रणयन की भी एक समृद्ध श्रृंखला विद्यमान रही है।

गढ़वाल में ज्योतिश लेखन

गढ़वाल (हिमालय) में संस्कृत-वाङ्मय की यद्यपि सर्वविध अभिवृद्धि हुई तथापि ज्योतिष विद्या का इस पर्वतीय प्रदेश में अत्यधिक महत्त्व रहा है। इस विद्या का मनुष्य के व्यावहारिक जीवन से साक्षात् सम्बन्ध रहा है और प्रर्वतमान में यह सम्बन्ध और भी घनिष्ठ होता जा रहा है। इसी कारण गढ़वाल (हिमालय) में ज्योतिश शास्त्र की प्राचीनतम परम्परा उपलब्ध होती है। गढ़वाल की भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आदि विभिन्न विषम समस्याओं के कारण पुरातन ज्योतिष ग्रंथ अद्यावधि यद्यपि अप्राप्त है तथापि उपलब्ध ज्योतिष साहित्य एवं प्रचलित मान्यताओं के आधार पर निःसन्देह स्पष्ट है कि गढ़वाल (हिमालय) में ज्योतिष की समृद्ध परम्परा विद्यमान रही है।

गढ़वाल में ज्योतिष परम्परा

गढ़वाल (हिमालय) में लिखे गये ज्योतिष शास्त्र के जो ग्रन्थ प्राप्त होते हैं, उनमें 16 वीं शताब्दी के ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण हैं। गढ़वाल में इस शास्त्र की अभिवृद्धि में जिनका सराहनीय योगदान रहा, उनमें गढ़वाल नरेश मानशाह का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने आश्रम में रहने वाले ज्योतिष के विद्वानों को ससम्मान संरक्षण दिया जिससे ज्योतिष विद्या का पर्याप्त प्रचार-प्रसार हुआ और उसका साहित्य भी विकसित हुआ।

गढ़नरेश मानशाह के राज ज्योतिषी का नाम ज्योतिकराय भरथ था। ये उच्चकोटि के ज्योतिषी थे। इन्होंने कुछ समय अकबर तथा जहाँगीर के राजदरबार में भी व्यतीत किया था।[4]

इन्होंने कुछ अवधि तक जहाँगीर (1605 ई0 से 1627 ई0 तक) व अकबर के दरबार में भी राज ज्योतिषी के पद को अलंकृत किया।[5] इन्होंने यद्यपि 4 सर्गों में विभाजित 'मानोदय' नामक खण्डकाव्य की रचना की जिसमें गढ़वाल नृपति मानशाह के उत्कर्ष काल की रोचक घटना का वर्णन करते हुए 16वीं शताब्दी के गढ़वाल की सामाजिक, ऐतिहासिक तथा राजनैतिक स्थिति का विषद वर्णन प्राप्त होता है, तथापि

ज्योतिकराय मूल रूप से ज्योतिष के प्रकाण्ड पण्डित रहे हैं। ऐतिहासिक तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अकबर अपने महत्त्वपूर्ण कार्यों में इन्हीं से परामर्श किया करते थे। 'अकबरनामा' में उल्लेख है कि ज्योतिकराय के कहने पर ही एक बार अशुभ लग्न के कारण अकबर तीन दिन तक अपनी राजधानी में नहीं गए थे।[6] प्रख्यात लेखक व समीक्षक राहुल सांकृत्यायन ने ऐतिहासिक तथ्यों के लिए ज्योतिकराय भरथ के 'मानोदय' काव्य को उद्धृत किया है।[7] संयोगवश इनकी ज्योतिष विषयक कोई भी रचना प्राप्त नहीं होती है।

वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ 'शंकर गुरू'-

पूर्व विवेचित गढ़नरेश मानशाह के उत्तराधिकारी पुत्र ष्यामशाह के शासन में ज्योतिष की पर्याप्त प्रगति हुई। 'ष्यामशाह का राज्यकाल ई0 सन् 1610-29 तक माना गया है। इन्हीं गढ़नरेश ष्यामशाह के राजगुरू थे 'शंकरगुरू'। शंकरगुरू द्वारा वास्तुशास्त्र पर लिखा गया ग्रन्थ ''वास्तु शिरोमणि '' गढ़वाल में प्राप्त ग्रन्थों में प्रथम ग्रन्थ माना जाता है। गृह निर्माण, प्राकृतिक आपदाओं से बचाव तथा मानवोपयोगी वास्तु विद्याओं की दृष्टि से यह ग्रन्थ विशेष महत्त्वपूर्ण है। शंकर गुरू प्रकाण्ड पाण्डित्य के धनी थे। आठ प्रकरणों में विभाजित यह ग्रन्थ स्वयं उनकी विद्वत्ता का परिचायक है।

जटाधर मिश्र

सोलहवीं शताब्दी के बाद गढ़वाल में ज्योतिष की परम्परा अविच्छिन्न रूप में दिखलाई पड़ती है। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में महाराजा फतेशाह के राज्याश्रित जटाधर मिश्र का नाम यहाँ के ज्योतिष आचार्यों में उल्लेखनीय है। इन्होंने 'जटाधरी' नामक ज्योतिष का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ की रचना गढ़वाल नरेश फतेशाह के शासनकाल में हुई। पंचांग गणना की दृष्टि से यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गढ़वाल के विविध पंचांग निर्माता अपने पंचांगों के निर्माण के लिए 'जटाधरी' का बहुतायत से प्रयोग करते हैं।

शंकर भट्ट

अट्ठारहवीं शताब्दी में गढ़वाल के ज्योतिष के ग्रन्थकारों में शंकर भट्ट एक विशिष्ट नाम है। ये ज्योतिष के उद्भट विद्वान थे। इन्होंने ''कारण वैष्णव'' नामक ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा। यह रचना 16 अधिकारों में विभाजित है। ज्योतिष शास्त्र में उपलब्ध होने वाले करण ग्रन्थों की परम्परा में शंकर भट्ट विरचित ''करण वैष्णव'' ग्रन्थ सर्वथा नवीन ग्रन्थ है। इन्होंने अपने ग्रन्थ के संदर्भ में लिखा है-

'यावद्गंगा च यमुना यावद् भागवती कथा।
सूर्य चन्द्रमसौ यावद् तावज्जूयत वैष्णवं।।[8]

ज्योतिष जैसे जटिल विषय को काव्य की ललित शैली में उपन्यस्त करना शंकर भट्ट का वैशिष्ट्य है जो उनके कथन से स्वयं स्पष्ट है।

श्री दामोदर पादपद्मयुगलं नत्वा च वागीश्वरीं,
सूर्यादींश्च स्वगान् विधिं गणपति श्री शंकर शंकरः।

कूर्वे दैवविदां हितायकरणं सिद्धान्त तत्त्वोपमं
स्वल्पं वृत्त विचित्रमर्थसुगमं लीलावगम्यं स्फुटम्।।[9]

पं0 सुरेशानन्द-

अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में टिहरी जनपद में ज्योतिष के एक प्रकाण्ड पण्डित हुए। इनका नाम सुरेशानन्द था इनका व्याकरण एवं ज्योतिष पर विशेष अधिकार था। विद्वत्समाज में ये अपने उपनाम 'माडुपण्डित' के नाम से प्रसिद्ध थे। ज्योतिष शास्त्र पर साधिकार लिखने व बोलने के कारण इन्हें त्रिकालज्ञ के नाम से भी उल्लिखित किया गया है।[10] इन्होंने 'करण-ग्रन्थ' के नाम से एक महत्त्वपूर्ण रचना लिखी थी जो संयोग वश अपूर्ण ही प्राप्त है। इस पुस्तक के मात्र 28 पद्य प्राप्त होते हैं। प्राप्त अंश में ग्रहों के क्षेपक चन्द्र-भौम-बुध-गुरू-आदि ग्रहों के साधन की प्रक्रिया स्पष्ट की गई है।

जयदेव बहुगुणा-

अट्ठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गढ़वाल में एक अन्य ज्योतिषाचार्य हुए। इनका नाम जयदेव बहुगुणा था। इनका गाँव श्रीनगर के समीप पोखरी था। इन्होंने जातक चन्द्रिका नामक प्रख्यात ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की। ग्रन्थकार ने ग्रन्थ में आत्मपरिचय तो प्रस्तुत नहीं किया, किन्तु ग्रन्थ-निर्माण-काल का उल्लेख किया गया है। इस उल्लेख से स्पष्ट होता है कि जयदेव बहुगुणा गढ़वाल नरेश प्रदीपशाह के राज्याश्रित ज्योतिषी थे। प्रदीपशाह का शासन काल 1717 ई0 से 1722 तक रहा।[11] जातक चन्द्रिका के अतिरिक्त इन्होंने विवाह पद्धति नामक एक अन्य ग्रन्थ भी लिखा जो संयोगवश अनुपलब्ध है।

''जातक चन्द्रिका'' ज्योतिष शास्त्र के फलित ग्रन्थों में महत्तपूर्ण ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ 16 अध्यायों में विभक्त है। इसमें लेखक ने अपने पूर्वाचार्यों के मतों को सादर समायोजित किया है। इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने स्वयं लिखा है-

इतीरिता जातक चन्द्रिका मया पूर्वोक्तशास्त्राणि विलोक्य लीलया।[12]

विषय प्रतिपादन एवं वर्णन शैली की दृष्टि से यह कृति अत्युत्तम है।

वासवानन्द बहुगुणा

18वीं शताब्दी के गढ़वाल के ज्योतिर्विदों में वासवानन्द बहुगुणा का प्रमुख स्थान है। ज्योतिष के अद्भुत ज्ञाता होने के साथ ही ये महान वीर एवं परम स्वाभिमानी भी थे। इनका समय 18 वीं शताब्दी का उत्तरार्ध एवं 19 वीं का पूर्वार्ध रहा है। ये गढ़नरेश महाराजा सुदर्शन शाह के राजज्योतिषी भी रहे।

गढ़वाल में ब्रिटिश शासन स्थापित होने पर वासवानन्द बहुगुणा ने विद्रोह किया और वे घर त्याग कर गढ़वाल के विभिन्न स्थानों पर रहे। कुछ दिन बाद वे गढ़वाल से इंदौर तथा पंजाब गये। ऐतिहासिक संकेत मिलते हैं कि तत्कालीन पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह से भी इनकी भेंट हुई। वासवानन्द की विद्या-बुद्धि और आध्यात्मिक शक्ति से महाराजा रणजीत सिंह अत्यन्त प्रभावित हुए।[13] इनके सम्बन्ध में गढ़वाल में अधोलिखित उक्ति विशेष रूप से प्रचलित है-

हिमालये स्वर्गसमानभूमौ प्रख्यात बहुगुण-विप्रवंश्यः।
तपोधनः सूर्यसमानतेजा श्री वासवानन्द द्विजो बभूव।।[14]

वासवानन्द बहुगुणा द्वारा अपनी अद्भुत प्रतिभा के अनुकूल यद्यपि अनेक ग्रन्थरत्नों की रचना गई थी, किन्तु उनमें ''प्रश्नसिन्धु'' नामक की रचना ही प्राप्त होती है। इस रचना में विभिन्न चिह्नों के माध्यम से नाना प्रकार के प्रश्नों के समाधान की सरल विधि वर्णित है। ग्रन्थ आठ तरंगों में समन्वित है। ज्योतिष की यह एक मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण कृति है।

मुकुन्दराय दैवज्ञ

गढ़वाल की ज्योतिष परम्परा में 20वीं शताब्दी के आचार्य मुकुन्दराय दैवज्ञ अलौकिक प्रतिभा के ध नी थे। ज्योतिष के क्षेत्र में इनका व्यक्तित्व स्वयं एक संस्था है। इनकी ज्योतिष पर लिखी गई कृतियों की एक लम्बी श्रृंखला है। इन्होंने लगभग 50 पुस्तकें लिखी हैं। इनमें अधिकतर ज्योतिष की है। ज्योतिस्तत्त्वम्, पंचांगमंजूशा, बृहद्होड़ाचक्रम्, ज्योतिषशास्त्रप्रवेशिका व इष्टलग्ननिर्णय उच्चकोटि के ग्रन्थ हैं। इनकी अलौकिक विद्वत्ता एवं अद्भुत लेखन से प्रभावित होकर ही उ0प्र0 शासन ने इन्हें '' अभिनव वराहमिहिर'' की उपाधि से सम्मानित किया तथा भारत के सर्वमान्य विद्वान् पंडित सूर्यनारायण व्यास, अमीरचन्द शास्त्री, परमेश्वरानन्द घिल्डियाल तथा बालकृष्ण भट्ट प्रभृति ने इनके व्यक्तित्व तथा कृतित्त्व को पृथग्-पृथग् रूप में व्याख्यायित किया है।[15] इससे उनके वैदुष्य का सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'ज्योतिस्तत्त्वम्' में ज्योतिष के समस्त तत्त्वों का सूक्ष्मतम चित्रण है। पुस्तक के अंत में ग्रन्थकार ने स्वयं कहा है कि-

ज्योतिस्तत्त्वमिदं मुकुन्दविदुशा देवप्रयागस्थले।
बालानां पठनाय शुद्धमनसां मेधाविनां निर्मितम्।।

सुदर्शनशाह के दरबार में दुर्गादत्त व सत्यानन्द नामक दो प्रकाण्ड पंडित हुए जिन्हें इतिहासकारों ने अद्वितीय ज्योतिषी स्वीकार किया है।[16]

उल्लिखित ज्योतिषाचार्यों के अतिरिक्त पं0 बालकृष्ण भट्ट विरचित जातक चन्द्रिका एवं ताजिक चन्द्रिका, चक्रधर भट्ट द्वारा रचित गदावली, अम्बिकादत्त अण्थ्वाल द्वारा लिखित सिंहमकरस्थ गुरू निर्णय, अमलानन्द धस्माणा विरचित ज्योतिष रत्न भण्डार सारिणी, वासवानन्द खण्डूड़ी, द्वारा लिखित सिंहमकरस्थ गुरूमीमांसा कुतुहल मुकुन्दराम किमोठी की ज्योतिष भाष्कर तोताराम भट्ट की पंचांग भास्कर तथा भीमदत्त कैन्थोला का मुहूर्त-संग्रह-दर्पण, गढ़वाल में प्राप्त होने वाले ज्योतिष ग्रन्थों में प्रमुख व उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं।

उल्लिखित मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त गढ़वाल में लिखे गये ज्योतिष ग्रन्थों की एक सुदीर्घ परम्परा है। इसके साथ ही यहाँ लिखे गये संकलित एवं टीका ग्रन्थों की सूची भी सुविस्तृत है। गढ़वाल में उपलब्ध होने वाले ज्योतिष शास्त्र के उपरोक्त परिचयात्मक साहित्य के सूक्ष्म अवलोकन से पता चलता है कि यहाँ प्राप्त होने वाली ज्योतिष की परम्परा जितनी प्राचीन है उतनी ही समृद्ध भी है। संस्कृत-साहित्य में ज्योतिष विद्या की परम्परा में गढ़वाल के ज्योतिषाचार्यों का यह योगदान निःसन्देह अनुपम एवं अनुकरणीय रहा है। सामान्यतया ज्योतिषशास्त्र को आचार्यों ने पाँच स्कन्धों (शाखा) में विभक्त किया है। वे स्कन्ध हैं- 1-सिद्धान्त, 2-होरा, 3-संहिता, 4-प्रश्न, और 5-शकुन।

उक्त साहित्य की समीक्षा से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि गढ़वाल में ज्योतिष की प्रत्येक विधा पर

मौलिक कार्य हुआ है।

प्रस्तुत संक्षिप्त प्रतिपादन से स्पष्ट है कि त्रिकालवर्ती स्थिति को प्रत्यक्ष करने वाले ज्योतिर्विद शास्त्र की, इसकी महत्ता के कारण ही, सम्पूर्ण भारतवर्ष की भाँति ही गढ़वाल (हिमालय) में भी उल्लेखनीय उन्नति हुई क्योंकि बिना ज्योतिषशास्त्र के कुछ भी सम्भव नहीं है

वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः
शास्त्रमकल्मशम्।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्म
न सिद्धयति।।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं ज्योतिषं तथा।
   छन्दश्चेति शडंगानि वेदस्याहुर्मनीशिणः।।
2. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।। पा0 शि0 41
3. अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
   हिमालयो नाम नगाधिराजः।
   पूर्वापरौ तोयनिधि वगाह्य
   स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।। कुमारसम्भव 1/1
4. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन पृ0सं0 222
5. अबुल फजल के अकबरनामा में कवि का उल्लेख है। vol I 1972. Page-85-86
6. अबुल फजल-अकबरनामा-vol-3. P.54
7. हिमालय परिचय I राहुल सांस्कृत्यायन P- 128
8. करण वैष्णव, 16/28
9. करण वैष्णव-1
10. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन पृ0सं0 229
11. श्रीवक्रतुण्डं परिचिन्त्य चेतसा ज्योतिर्विदोयं जयदेव शर्मणा।
    श्रीमत्प्रदीपे धरणिं प्रशासति शाके द्विशैलाष्टियुते नमस्यके।। जा0च0 102
12. जातक चन्द्रिका, पृ0सं0 102
13. कर्मभूमि, भैरवदत्त धूलियाश 10-2-1953
14. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन पृ0सं0 241
15. ज्योतिश्मती, 1958 पृ0सं0 22-24 तथा कर्मभूमि 3-7-1965, P-2
16. गुलदस्त तवारीख P 86